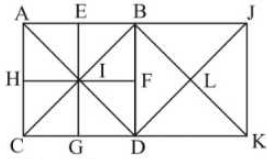


तीन घनों वाले प्रत्येक दो स्तंभ हैं।
तीन स्तंभ हैं, जिनमें से प्रत्येक में
दो घन हैं।

चार स्तंभ हैं, प्रत्येक में केवल
एक घन है।

इस प्रकार, घनों की कुल संख्या
 $= 4 + 6 + 6 + 4 = 20$ घन

5. (b)



त्रिभुज हैं :

$\triangle AIH$; $\triangle AIE$; $\triangle EIB$; $\triangle BFI$;
 $\triangle IHC$; $\triangle IGC$; $\triangle IGD$; $\triangle DFI$;
 $\triangle IAB$; $\triangle IBD$; $\triangle ICD$; $\triangle IAC$;
 $\triangle BAC$; $\triangle ACD$; $\triangle BDC$; $\triangle BDA$;
 $\triangle BLD$; $\triangle LDG$; $\triangle KLG$; $\triangle JLG$;
 $\triangle JBK$; $\triangle BDK$; $\triangle DBJ$; $\triangle DKJ$;
 $\triangle ADJ$; $\triangle CBK$.

इस प्रकार, 26 त्रिभुज हैं।

6. (a) मुख्य आकृति में भुजाओं की संख्या के बराबर पिन, आकृति (2), (3), (4) और (5) के मामले में मुख्य आकृति की भुजा के मध्य बिंदु से जुड़े होते हैं। आकृति (1) में, ये पिन मुख्य आकृति के एक शीर्ष से जुड़े होते हैं।
7. (d) अन्य सभी आकृतियों में, तीर और V चिह्न मुख्य आकृति के काले सिरे की ओर स्थित हैं।
8. (a) अन्य सभी आकृतियों में, निचला-दायां चौथाई भाग छायांकित है।
9. (b) आकृति (2) को छोड़कर प्रत्येक में पाँच तीर के निशान हैं।
10. (c) आकृति (3) को छोड़कर प्रत्येक में, दो क्रॉस (x) विकर्णवत विपरीत कोनों में दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष (अनुमान) मूल्यांकन

प्रस्तावना

यह अध्याय आपको एक ऐसे प्रश्न प्रारूप से परिचित कराता है, जो कि लगभग सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में नियमित रूप से पूछा जाता है निष्कर्ष, तथ्यों पर आधारित एक तार्किक निष्कर्ष है। एक वैध अनुमान विश्वसनीय और यथार्थवादी है। प्रारूप के अनुसार, अनुमान (निष्कर्ष) को अनुकरित करते हुए एक अवतरण दिया जाता है और परीक्षार्थी से पूछा जाता है कि दिया गया निष्कर्ष अवतरण में अनुकरित किया गया है या नहीं। नीचे दिए गए प्रारूप को देखें:

समस्या किस प्रकार की है?

समस्या का प्रकार/प्रारूप:

निर्देश (प्र.सं. 1-5) : नीचे दिया गया अवतरण कुछ निष्कर्षों का अनुसरण करता है, जो कि अवतरण में दिए गए तथ्यों से निकाले जा सकते हैं। आपको अवतरण के आधार पर प्रत्येक निष्कर्ष को समझना होगा और सत्यता या मिथ्यता की जाँच करनी होगी।

उत्तर अंकित करें:

- यदि 'निष्कर्ष पूर्णतः सत्य' हो या यह वाक्यों के तथ्यों का उचित रूप से अनुसरण करता हो।
- यदि निष्कर्ष 'संभवतः सत्य' हो, न कि दिए गए तथ्यों से पूर्णतः सत्य हो।
- यदि 'तथ्य अपूर्ण हो' या दिए गए तथ्यों से आप यह न बता सकें कि निष्कर्ष सही या गलत है।
- यदि निष्कर्ष 'संभवतः गलत' हो न कि दिए गए तथ्यों से पूर्णतः गलत हो।

- यदि निष्कर्ष 'पूर्णतः गलत' हो या यह दिए गए तथ्यों से न निकाला जा सके या यह दिए गए तथ्यों का उल्लंघन करता हो।

अवतरण

6 करोड़ झुग्गी बस्ती में रहने वाले लोगों के लिए घर की महत्त्वाकांक्षी योजना और झुग्गी बस्ती मुक्त भारत के निर्माण के लिए सरकार 400 गाँवों और शहरों में 50 लाख रिहायशी इकाईयाँ 5 वर्ष में बनाने की योजना बना रही हो।

यह योजना पूरे देश में फैले हजारों एकड़ की मूल्यवान सरकारी जमीन को मुक्त कर सकती है और रीयल स्टेट उद्योगपतियों के लिए करोड़ों का व्यापार बना सकती है। झुग्गी बस्तियों का निर्माण कई वर्षों से देश की जीडीपी पर विपरीत प्रभाव डाल रहा है। झुग्गी में रहने वाले लोग गरीब स्वास्थ्य परिस्थितियों में रहने को मजबूर हैं। सरकार को भरोसा है कि बेहतर गृह सुविधाओं से सामाजिक मुद्दे हल होंगे और बहु आयामों परिणाम होंगे और आर्थिक सेवा में प्रोत्साहन मिलेगा।

- भारत में झुग्गी बस्ती के लिए घेरी गई जगह का विकास आम आदमी पर किसी तरह का प्रभाव नहीं डालती है।
- ज्यादातर झुग्गी बस्तियाँ शहरों और नगरों के महत्वपूर्ण निजी संपत्ति है।
- झुग्गी बस्ती में रहने वाले व्यक्तियों की प्रति व्यक्ति आय बेहतर घर में सुविधाओं से साथ रहने वाले व्यक्तियों से बहुत कम है।

प्र.4. विकसित देशों के शहर और नगर झुग्गी बस्तियों से मुक्त हैं।

प्र.5. झुग्गी बस्तियों में स्वास्थ्य और स्वच्छता की स्थिति भारतीय शहरों और नगरों के स्वीकार्य मानदंडों से काफी नीचे हैं। प्रश्न को हल करने से पहले हमें प्रश्न के प्रारूप को देखना चाहिए और यह पता करना चाहिए कि आप को पहले क्या सोचना है?

एक छोटी-सी नजर आपको स्पष्ट कर देगी कि परीक्षक ने विकल्प मिलते-जुलते दिए हैं। उसने एक की जगह दो सकारात्मक विकल्प दिए हैं।

(i) पूर्णतः सत्य

(ii) संभवतः सत्य

उसके बाद एक की जगह दो नकारात्मक विकल्प दिए हैं-

(i) पूर्णतः गलत

(ii) संभवतः गलत

यह प्रारूप ज्यादा ध्यान चाहता है क्योंकि यह आपके लिए निम्न उलझन उत्पन्न करता है-

1. पूर्णतः सत्य या संभवतः सत्य
2. पूर्णतः गलत या संभवतः गलत
3. तथ्य अपूर्ण या संभवतः सही
4. तथ्य अपूर्ण या संभवतः गलत

1. पूर्णतः सत्य या संभवतः सत्य

यदि दिया गया निष्कर्ष किसी दिए गए तथ्य का सीधा परिणाम हो, तो यह पूर्णतः सच की श्रेणी में आता है। लेकिन भ्रम की स्थिति तब आ सकती है जब दिया गया निष्कर्ष अवतरण में सीधे ही नहीं आता, लेकिन यह आपको 'लगभग' सही लगता है। चुकी यह अवतरण में स्पष्ट रूप से कहा नहीं गया है, आप यह सोच सकते हैं कि 'संभवतः सच' ही सही उत्तर हो सकता है। इस भ्रम से बाहर आने के लिए आपको अपने तर्क

को जाँचना होगा। यदि दिया गया निष्कर्ष अवतरण में सीधे वर्णित न हो, तो आपको निष्कर्ष निकालने के लिए कुछ 'अतिरिक्त' मानना पड़ेगा। अब स्वयं से निम्न प्रश्न करें-

(A) क्या अतिरिक्त धारणा एक सार्वभौमिक सत्य है?

(B) क्या अतिरिक्त धारणा कभी भी गलत नहीं हो सकती?

यदि आप प्रश्न (A) के लिए 'हाँ' और प्रश्न (B) के लिए 'कभी नहीं' पाएँ, तो 'पूर्णतः सच' को चुने अन्यथा 'संभवतः सच' को चुनें।

2. पूर्णतः गलत या संभवतः गलत

यदि दिया गया निष्कर्ष अवतरण का अनुसरण नहीं करता, यह 'पूर्णतः गलत' की श्रेणी में आता है। लेकिन भ्रम पैदा हो सकता है, जब दिया गया निष्कर्ष सीधे अवतरण में न दिया हो और लगभग 'पूर्णतः गलत' जैसा दिया हो। लेकिन जुड़ी हुई चीजें अवतरण में स्पष्ट रूप से दिया न हो, आप सोच सकते हैं कि 'संभवतः गलत' हो सकता है। इस भ्रम को दूर करने के लिए आपको अपने तर्क को जाँचना होगा। यदि निष्कर्ष विपरित अवतरण में न दिया हो तो आपको निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए कुछ धारणाएँ माननी होंगी। अब, स्वयं से निम्न प्रश्न करें-

(A) क्या अतिरिक्त धारणा एक सार्वभौमिक सत्य है?

(B) क्या अतिरिक्त धारणा कभी भी गलत नहीं हो सकती?

यदि आपने प्रश्न (A) के लिए 'हाँ' और प्रश्न (B) के लिए 'कभी नहीं' पाया, तो अपना उत्तर पूर्णतः गलत चुने अन्यथा संभवतः गलत आपका सही उत्तर होगा।

3. तथ्य अपूर्ण या संभवतः सही

जब अवतरण से अस्पष्ट निष्कर्ष निकलता है, यह भ्रम पैदा हो सकता है। यदि दिया गया निष्कर्ष स्पष्ट रूप से दिया न हो, आप सोच सकते हैं कि तथ्य अस्पष्ट है क्योंकि निष्कर्ष निकालने के लिए आवश्यक जानकारी नहीं दी गयी है। यदि लगता है कि दिया गया निष्कर्ष अवतरण में दिए गए सामान्य बातों से मिलता-जुलता है, तो आप 'संभवतः सही' चुन सकते हैं। इस भ्रम से बाहर आने के लिए अपनी सामान्य मानसिक तर्क को जाँच लें। आप दिए गए निष्कर्ष को संभवतः सही कह सकते हैं, यदि कुछ अतिरिक्त धारणा की सहायता से, दिया गया निष्कर्ष सही प्रतीत हो। इस प्रकार, आप अपने आपको मना सकते हैं कि दिया गया निष्कर्ष सही प्रतीत होता है। दूसरी तरफ, आप यह कह सकते हैं कि तथ्य अपर्याप्त है, यदि अतिरिक्त धारणा के साथ भी आप अवतरण से कोई पर्याप्त निष्कर्ष न निकाल सकें।

4. तथ्य अपूर्ण या संभवतः गलत

जब अवतरण से अस्पष्ट निष्कर्ष निकलता है, तो यह भ्रम पैदा हो सकता है। जैसा कि यह अवतरण में स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है, आप इस निष्कर्ष में आ सकते हैं कि तथ्य अपर्याप्त हैं क्योंकि निष्कर्ष निकालने के लिए आवश्यक तथ्य नहीं दिए गए हैं। फिर भी सामान्य बात में आपको दिया गया अवतरण निष्कर्ष का उल्लंघन करते दिख सकता है। इसलिए आपको संभवतः गलत विकल्प चुनना चाहिए। केवल यदि आपको कोई ऐसा तर्कसंगत अवधारणा मिल जाए जिसे अवतरण में दिए गए तथ्यों के साथ मिलाने पर दिया गया निष्कर्ष गलत प्रतीत होता है। दूसरी तरफ आप 'तथ्य अपर्याप्त है', विकल्प चुन सकते हैं, यदि आपको कोई ऐसा तर्कसंगत अवधारणा न मिल सके जिसे अवतरण में दिए गए तथ्यों

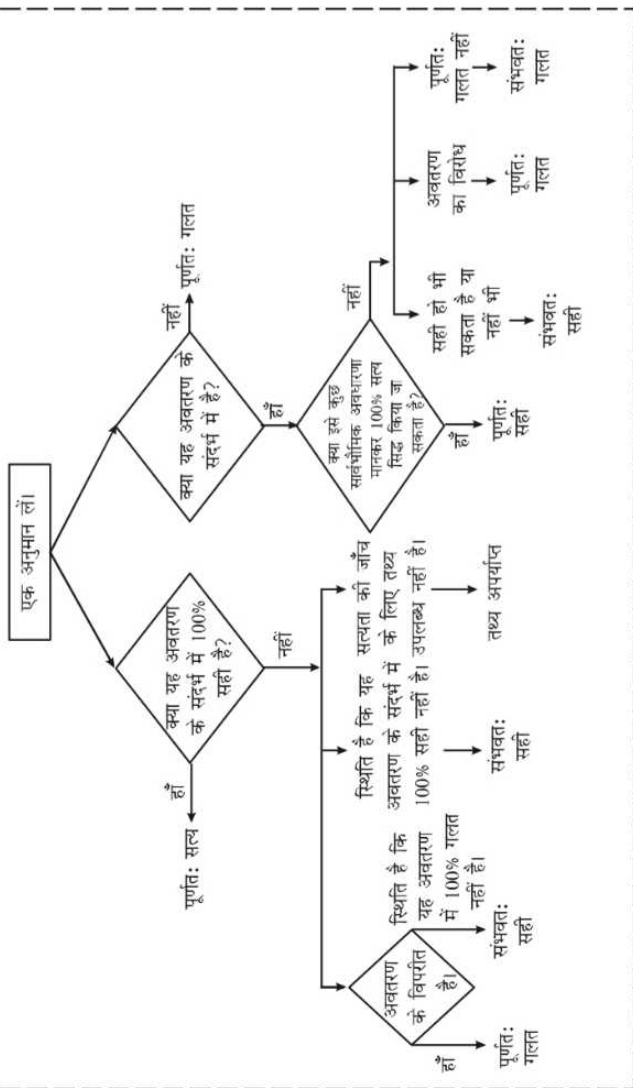
के साथ मिलाने पर निश्चित निष्कर्ष निकले तो इस स्थिति में आप अश्वस्त नहीं हो सकते कि दिया गया निष्कर्ष संभवतः सही या गलत है।

अब, उपरोक्त दिए गए नियमों को ऊपर दिए अवतरण में लगाते हैं और प्रश्न को हल करने की कोशिश करते हैं।

सामान्य प्रश्न का हल

1. (c) हमारे पास मुक्त की गई जमीन सामान्य आदमी को कैसे फायदा पहुँचाएगी इसकी कोई जानकारी नहीं है, इसलिए जानकारी अपर्याप्त है, हमारा उत्तर होगा। अवतरण हमें कोई भी अवधारणा नहीं प्रस्तावित करता है।
2. (e) अवतरण झुग्गी बस्तियों से छुटकारा पाने के लिए कहता है कि "सरकारी..... मुक्त कर सकती है"। निष्कर्ष अवतरण का अनुसरण नहीं करता है।
3. (b) एक अतिरिक्त अवधारणा जो इस विकल्प को संभवतः सही बनाती है: कम उत्पादन, कम आय को जन्म देती है। यह अवतरण सीधे प्रति व्यक्ति आय की बात नहीं करता।
4. (b) गरीबी भारत में कम जीडीपी विकास को प्रेरित करती है। यह कथन अवतरण के स्वर से मिलता-जुलता है। यहाँ अतिरिक्त अवधारणा यह है कि जैसे देश विकास करता है, उन्हें ऐसे चीज़ प्रसारित करने की आवश्यकता होती है, जिससे जीडीपी बढ़े। इसलिए यह शायद सही हो सकता है कि सभी झुगियाँ समाप्त हों जाएँ।
5. (a) अवतरण कहता है कि झुग्गी में रहने वाले लोग "गरीब स्वास्थ्य स्थिति" के लिए असंवेदनशील होते हैं। यह अवतरण में सीधे ही बताया गया है।

□ शॉर्टकट विधि



प्रश्नावली

निर्देश (प्र.सं. 1-5): नीचे एक अवतरण दिया गया है, जिसके बाद कई संभावित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं, जो अवतरण में बताए गए तथ्यों से लिए जा सकते हैं। आपको अवतरण के संदर्भ में अलग से प्रत्येक निष्कर्ष की जांच करनी होगी और उसकी सत्यता या असत्यता की मात्र पर फैसला करना होगा।

उत्तर (1) दें, यदि अनुमान 'निश्चित रूप से सत्य' है, अर्थात् यह दिए गए तथ्यों के विवरण से ठीक से पालन करता है।

उत्तर (2) दें, यदि अनुमान 'संभवतः सत्य' है, हालांकि दिए गए तथ्यों के आलोक में 'निश्चित रूप से सत्य' नहीं है।

उत्तर (3) दें, यदि 'आँकड़े अपर्याप्त' हैं, अर्थात् दिए गए तथ्यों से आप यह नहीं कह सकते हैं कि अनुमान सत्य या असत्य है।

उत्तर (4) दें, यदि अनुमान 'संभवतः गलत' है, हालांकि दिए गए तथ्यों के आलोक में 'निश्चित रूप से गलत' नहीं है।

उत्तर (5) दें, यदि अनुमान 'निश्चित रूप से गलत' है, अर्थात् यह दिए गए तथ्यों से संभवतः निकाला नहीं जा सकता है या यह दिए गए तथ्यों का प्रतिवाद करता है।

बैंकों की कुल संपत्ति की गुणवत्ता में गिरावट : सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्तियाँ (एनपीए) दिसंबर 2009 के अंत में दिसंबर 2008 के अंत की तुलना में 27% अधिक होने की रिपोर्ट है- आश्चर्यजनक नहीं है। विकास में किसी भी तरह की कमी होने से एनपीए में वृद्धि होना सुनिश्चित है क्योंकि अधिक से अधिक कंपनियाँ ऋण चुकाने में चूक करती हैं। यह प्रभाव साफ-साफ दिखेगा जब मंदी एक गंभीर वैश्विक मंदी के साथ जा

मिलेगी। लेकिन यदि केंद्रीय बैंक ने काफी उदार शर्तों पर ऋणों के पुनर्गठन की अनुमति नहीं दी होती, एनपीए और भी अधिक होते। विवेकवान बैंक जिन्होंने ऋण मंजूर करते समय ध्यान रखा और उसके बाद मंजूरी-उत्तर सवितरण की तत्परता से निगरानी की, वे इस संकट से उबर जाएंगे। लेकिन एक चक्रीय मंदी के कारण एनपीए में वृद्धि होना एक बात है और नीतिगत त्रुटियों के कारण एनपीए का बढ़ना नितांत अलंकृत बात है जो पूरी तरह से नीति निर्माताओं के दायरे में हैं। और यह वही है जिसकी हमें रक्षा करने की आवश्यकता है। अत्यधिक कम ब्याज दरें ऐसी परियोजनाओं को व्यवहार्य दिखाकर जो वास्तव में व्यवहार्य नहीं होतीं, जोखिम-पारितोषिक समीकरण को तब तक निरस्त कर देती हैं- जब तक कि ब्याज दरें उलट नहीं होती हैं और समान परियोजनाएं व्यवहार्य नहीं रह जाती हैं! अब यह अच्छी तरह से स्थापित हो चुका है कि अनुचित रूप से कम ब्याज दरों की लंबी अवधियाँ बैंकों को अधिक जोखिम लेने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। समष्टि आर्थिक मूलभूत आँकड़ों के बजाय आसान ब्याज नीति द्वारा संचालित कम ब्याज दर वाले दौर ऋण के अत्यधिक विस्तार की ओर ले जाते हैं। ये बैंकों को अधिक लाभ की तलाश में अधिक जोखिम लेने और जोखिम को गलत कीमत लगाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

1. उच्च एनपीए बैंकों द्वारा दिए गए ऋण के सवितरण और अनुवर्ती में कमियों को इंगित करता है।
2. केंद्रीय बैंक हमेशा बैंकों को एनपीए में वृद्धि की स्थिति में अपने ऋणों का पुनर्गठन करने की अनुमति देता है।

3. कम ब्याज दर वाला चक्र वाणिज्यिक रूप से अव्यवहार्य परियोजना को व्यवहार्य बनाकर दिखाता है।
4. ऋण पर कम ब्याज दर विभिन्न बेहिसाब जोखिम कारकों को अवशोषित करने की क्षमता को कम कर देते हैं।
5. बैंकों के एनपीए केवल आर्थिक कारकों के कारण होते हैं।

निर्देश (प्र.सं. 6-10): नीचे एक परिच्छेद दिया गया है, जिसके बाद कई संभावित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं, जो परिच्छेद में बताए गए तथ्यों से लिए जा सकते हैं। आपको परिच्छेद के संदर्भ में अलग से प्रत्येक निष्कर्ष की जाँच करनी होगी और उसकी सत्यता या असत्यता की मात्र पर फैसला करना होगा।

उत्तर (a) दें, यदि अनुमान 'निश्चित रूप से सत्य' है, अर्थात् यह दिए गए तथ्यों के विवरण से ठीक से पालन करता है।

उत्तर (b) दें, यदि अनुमान 'संभवतः सत्य' है, हालांकि दिए गए तथ्यों के आलोक में 'निश्चित रूप से सत्य' नहीं है।

उत्तर (c) दें, यदि 'आँकड़े अपर्याप्त' हैं, अर्थात् दिए गए तथ्यों से आप यह नहीं कह सकते हैं कि अनुमान सत्य या असत्य है।

उत्तर (d) दें, यदि अनुमान 'संभवतः गलत' है, हालांकि दिए गए तथ्यों के आलोक में 'निश्चित रूप से गलत' नहीं है।

उत्तर (e) दें, यदि अनुमान 'निश्चित रूप से गलत' है, अर्थात् यह दिए गए तथ्यों से संभवतः निकाला नहीं जा सकता है या यह दिए गए तथ्यों का प्रतिवाद करता है।

(नोट: प्रत्येक प्रश्न में केवल एक ही उत्तर होता है अर्थात् किसी भी दो प्रश्न का एक ही

उत्तर नहीं हो सकता है। यदि आपको एक से अधिक प्रश्नों के लिए एक ही उत्तर मिलता है, तो दोनों पर फिर से विचार करें और निर्णय लें कि दोनों में से कौन सा अधिक निश्चित रूप से उत्तर होगा और इसी तरह दूसरों की भी समीक्षा करें)

हृदयवाहिका रोग इतना प्रचलित है कि लगभग सभी व्यवसायों में ऐसे कर्मचारी होने की संभावना है, जो इस स्थिति से पीड़ित हैं, या विकसित हो सकते हैं। अनुसंधान से पता चलता है कि दिल का दौरा पड़ने वाले सभी लोगों में से 50-80 प्रतिशत लोग काम पर लौटने में सक्षम हैं। हालांकि, यह संभव नहीं हो सकता है अगर वे पहले भारी शारीरिक काम में शामिल रहे हैं। ऐसे मामलों में, कर्मचारी को उचित कार्यों के साथ हल्के कार्यों में स्थानांतरित करना संभव हो सकता है, जहां आवश्यक हो। इसी तरह, उच्च दबाव, तनावपूर्ण काम यहां तक कि जहां यह शारीरिक गतिविधि को शामिल नहीं करता है, वहां भी बचा जाना चाहिए। मानव संसाधन प्रबंधकों को हृदय संबंधित रोगों वाले कर्मचारियों के लिए नौकरी की भूमिका के निहितार्थ के बारे में पता होना चाहिए।

6. जो कर्मचारी हृदय रोग से पीड़ित होते हैं वे ज्यादातर काम पर नहीं लौट पाते हैं।
7. हृदयवाहिका रोगों से पीड़ित कर्मचारी तनावपूर्ण स्थितियों को संभालने में असमर्थ हैं।
8. 50 वर्ष से अधिक आयु के कर्मचारी हृदय रोग से पीड़ित पाए जाते हैं।
9. शारीरिक और तनावपूर्ण कार्य से निश्चित रूप से दिल का दौरा पड़ता है।
10. हृदय रोग किसी भी प्रकार के व्यवसाय में कर्मचारियों को प्रभावित कर सकता है।

संकेत एवं हल

1. (a) परिच्छेद में दिए गए आँकड़ों से, यह स्पष्ट है कि अनुमान निश्चित रूप से सत्य है।
2. (b) निष्कर्ष में शब्द 'हमेशा' का प्रयोग दर्शाता है कि अनुमान संभवतः सत्य है।
3. (a) अनुमान निश्चित रूप से सत्य है। परिच्छेद की निम्नलिखित पंक्ति पर विचार करें:
'अत्यधिक कम ब्याज दरें ऐसी परियोजनाओं को व्यवहार्य दिखाकर जो वास्तव में व्यवहार्य नहीं होती।'
 4. (e) अनुमान निश्चित रूप से असत्य है। परिच्छेद की निम्नलिखित पंक्ति पर विचार करें:
'अब यह अच्छी तरह से स्थापित हो चुका है कि अनुचित रूप से कम ब्याज दरों की लंबी अवधियाँ बैंकों को अधिक जोखिम लेने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।'
 5. (a) अनुमान निश्चित रूप से सत्य है क्योंकि एनपीए में वृद्धि चक्र्रीय कारकों पर निर्भर करती है।
 6. (e) परिच्छेद में यह उल्लेख किया गया है कि हृदयाघात से पीड़ित 50-80 प्रतिशत लोग काम पर लौटने में सक्षम हैं। इसलिए, अनुमान निश्चित रूप से गलत है।
 7. (b) यह उल्लेख है कि जिन व्यक्तियों को दिल का दौरा पड़ा है, उन्हें उच्च दबाव, तनावपूर्ण काम से बचना चाहिए। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अनुमान संभवतः सत्य है।
 8. (c) इस अनुमान के बारे में कोई जानकारी नहीं है।
 9. (d) निष्कर्ष में शब्द 'निश्चित रूप से' का उपयोग संदेहजनक बनाता है। इसलिए, अनुमान संभवतः असत्य है।
 10. (a) परिच्छेद की पहली पंक्ति पर विचार करें। परिच्छेद की पहली पंक्ति से यह स्पष्ट है कि अनुमान निश्चित रूप से सत्य है।

अध्याय

26

कथन एवं तर्क

प्रस्तावना

हम इस अध्याय में तर्क के बारे में पढ़ेंगे। वास्तव में, यह एक अध्ययन है, जिसे हम सभी तर्क का मूल मानते हैं। क्या आप जानते हैं कि हम तर्क में क्या करते हैं? कुछ तथ्यों के आधार पर तर्क में कुछ बिन्दुओं को देखने की वकालत करते हैं और इसे तर्क-वितर्क कहते हैं। यह तथ्य है कि विश्लेषणात्मक तर्क की सभी शाखाएँ कहीं न कहीं तर्क-वितर्क से जुड़ी होती हैं और इस वजह से परीक्षा के मद्देनजर कथन और तर्क को पढ़ना बहुत महत्वपूर्ण है।

तर्क की संकल्पना

दो या अधिक वाक्यों का समूह/मुहावरा/अनुच्छेद जो निष्कर्ष (या दावा) को सम्मिलित करते हैं, तर्क कहलाता है। तर्क का निष्कर्ष एक या अधिक कथन पर निर्भर करता है और यह कथन (प्रस्ताव) कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त, तर्क के कुछ छिपे हुए प्रस्ताव भी हो सकते हैं, जिसे अवधारणा कहा जा सकता है। नीचे दिए गए उदाहरण को देखें।

▶ **उदाहरण** श्रीमान शर्मा ने ज्यादा मात्रा में मिठाई खरीदी, उन्होंने कुछ उत्सव मनाया होगा।

हल:

ऊपर दिए गए उदाहरण के दो हिस्से हैं:

- I. “श्रीमान शर्मा ने ज्यादा मात्रा में मिठाई खरीदी”।
- II. “उन्होंने कुछ उत्सव मनाया होगा”।

यहाँ, भाग “II” दिए गए तर्क का निष्कर्ष है। यह निष्कर्ष (भाग II हिस्सा) कैसे आया? वास्तव में, यह निष्कर्ष कुछ अनुपूरक प्रमाण या प्रस्ताव से आया, जो कि तर्क का I भाग है। क्या आपने देखा कि इस तर्क में भाग I और भाग II (प्रस्ताव और निष्कर्ष) एक छिपे हुए प्रस्ताव से जुड़े हुए हैं, जो कि सीधे दिया गया नहीं है। यह छिपा हुआ प्रस्ताव “ज्यादा मात्रा में मिठाईयाँ सिर्फ उत्सव में खरीदी जाती हैं” और इस प्रस्ताव को अवधारणा भी कह सकते हैं। इस प्रकार दिए गए तर्क के तीन भाग हैं:

भाग I: (प्रस्ताव) श्रीमान शर्मा ने ज्यादा मात्रा में मिठाईयाँ खरीदी।

भाग II: (अवधारणा या छिपे हुए प्रस्ताव) ज्यादा मात्रा में मिठाईयाँ सिर्फ उत्सव में खरीदी जाती है।

भाग III: (निष्कर्ष) उन्होंने कुछ उत्सव मनाया होगा।

यह ध्यान देने योग्य है कि भाग II एक अवधारणा है (एक छिपा हुआ प्रस्ताव) जो भाग I (प्रस्ताव) और भाग III (निष्कर्ष) को जोड़ता है और इस प्रकार, यह दिए गए तर्क के भाग I और III के बीच का छूटा हुआ भाग है।

इसमें कोई शक नहीं है कि ऊपर दिया गया उदाहरण तर्क-वितर्क की बुनियादी विशेषताओं को बताता है, लेकिन यह हमारे मेल-जोल के कुछ प्रश्न भी रख जाता है:

- (i) क्या तर्क में अवधारणा या छिपे प्रस्ताव हमेशा रहते हैं?

- (ii) क्या तर्क में एक ही प्रस्ताव होता है? ऊपर दिए गए दोनों प्रश्न का उत्तर 'ना' होगा। ऐसा क्यों है? ऊपर दिए गए दोनों प्रश्न के स्पष्टीकरण के लिए देखें:

- (i) **प्रश्न का स्पष्टीकरण:** तर्क को देखें "श्रीमान शर्मा ने ज्यादा मात्रा में मिठाई खरीदी। ज्यादा मात्रा में मिठाईयाँ सिर्फ उत्सव में खरीदे जाते हैं। इसलिए हमें एक उत्सव मनाना चाहिए।"

हम यहाँ, देखते हैं कि तर्क में कोई अवधारणा नहीं है क्योंकि प्रस्ताव या सहायक सबूत (श्रीमान शर्मा) ने ज्यादा मात्रा में मिठाई खरीदी और निष्कर्ष (इसलिए, हमें उत्सव मनाना चाहिए) एक अन्य कथन (ज्यादा मात्रा में मिठाई उत्सव में खरीदी जाती है) से जुड़े हुए हैं। याद रखें, अवधारणा एक छिपा हुआ प्रस्ताव है। इसका मतलब यह है कि अवधारणा तर्क की शृंखला में एक छूटी हुई कड़ी है। इस प्रकार यदि तर्क अपने आप में पूरा है, फिर इसमें कोई अवधारणा नहीं होगी। दिए गए तर्क में मुख्य कथन (ज्यादा मात्रा में मिठाई सिर्फ उत्सव में खरीदी जाती है) प्रस्ताव या सहायक तथ्य और निष्कर्ष को जोड़ता है, जिससे तर्क कल्पनारहित हो जाता है।

- (ii) **प्रश्न का विवरण:** दिए गए तर्क को देखें "वंदना लंबी है। वह दुबली है और खूबसूरत आँखें हैं। उसके लंबे बाल हैं और साथ ही आकर्षक चेहरा है। इसलिए वंदना खूबसूरत लड़की है।"

यहाँ,

पहला आधार: वंदना लंबी है।

दूसरा आधार: वह दुबली है और उसकी खूबसूरत आँखें हैं।

तीसरा आधार: उसके लंबे बाल हैं और आकर्षक चेहरा भी है।

निष्कर्ष: इसलिए वंदना खूबसूरत लड़की है।

यह सिद्ध करता है कि तर्क में एक से ज्यादा आधार हो सकते हैं। यह विवरण प्रश्न (i) का प्रत्युत्तर भी है क्योंकि दिए गए तर्क में कोई छूटी हुई कड़ी नहीं है। यह कथन अपने आपमें पूर्ण है और इस प्रकार से यह छिपे हुए आधार और अवधारणा से मुक्त है।

तर्क-वितर्क के तरीके: आपने अब तर्क-वितर्क को मूल संरचना समझ ली होगी और इस निष्कर्ष पर पहुँच गए होंगे कि किसी को कुछ समझाने के लिए किसी बिन्दु पर आपको अपने तर्क पर मजबूत होना होगा।

- (i) **समानता पर आधारित तर्क:** समानता पर आधारित तर्क किसी एक बिन्दु को मजबूत करने के लिए आवश्यक है। वास्तव में, समानता विशेष वस्तुओं के बीच एकरूपता से निकाला गया निष्कर्ष है। उदाहरण के लिए, यदि हम पाते हैं कि एक मोटी औरत बहुत ज्यादा खाती है और एक अलग औरत से मिलते हैं वह भी मोटी है तो हम समानता से मान सकते हैं कि अगली मोटी औरत भी बहुत ज्यादा खाती होगी।

हम अलग तरीके से कह सकते हैं कि यदि x, y, z, q कोई तत्व हैं और u, v, w कोई गुण हैं तो समान तर्क इस रूप में दिखाया जा सकता है:

x, y, z, q सभी के गुण u और v हैं।

x, y, z के गुण w हैं।

$\therefore q$ का गुण शायद w है।

► **उदाहरण 1.** सचिन और धोनी ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट में शतक लगाया। दूसरे टेस्ट में सचिन और धोनी ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 150 से ज्यादा रन बनाये तथा

सचिन ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे टेस्ट में दोहरा शतक बनाया तो धोनी भी ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे टेस्ट में शतक बनाएगा।

➤ **उदाहरण 2.** ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड दोनों भारत के खिलाफ फुटबॉल और हॉकी में हार गये तो भारत को, दोनों देशों को क्रिकेट में भी हारना चाहिए।

निष्कर्ष:

उदाहरण 1 में सचिन और धोनी दोनों ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले दो मैचों में अच्छा प्रदर्शन किया। वास्तव में यह दिखता है कि धोनी ने वही कार्य किया जो सचिन ने पहले और दूसरे टेस्ट में किया। जैसा कि सचिन ने तीसरे टेस्ट मैच में दोहरा शतक लगाकर बहुत अच्छी पारी खेली, इस प्रकार एक समान स्थिति में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि धोनी भी दोहरा शतक बनाएगा।

हम यह भी जानते हैं कि अच्छा या बुरा खेलना मौके की बात है। यह मौके पर निर्भर करता है कि दोनों खिलाड़ियों (सचिन) और (धोनी) ने अंतिम दो टेस्ट मैचों में एक समान प्रदर्शन किया। इसलिए हम आवश्यक रूप से यह नहीं कह सकते हैं क्योंकि सचिन ने दोहरा शतक बनाया, धोनी भी दोहरा शतक मार सकता है और नहीं भी। यह भी कहा जा सकता है कि भविष्य में प्रदर्शन की, पिछले प्रदर्शन के आधार पर भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। इसलिए यह स्पष्ट है कि समानता पर आधारित तर्क मजबूत नहीं प्रतीत होता। इसी प्रकार उदाहरण (2) की स्थिति में हम कह सकते हैं कि भारत ने दोनों देशों को दो विभिन्न खेलों (फुटबॉल और हॉकी) में हराया, भारत केवल क्रिकेट में भी ऑस्ट्रेलिया और

इंग्लैंड को हरा भी सकता है और नहीं भी। इसलिए उदाहरण (2) में दिया गया तर्क भी कमजोर तर्क लगता है।

अंतिम टिप्पणी: समानता पर आधारित तर्क कमजोर तर्क है।

(ii) **कारण पर आधारित तर्क:** यह तर्क कारण को परिणाम से जोड़ता है। नीचे दिए गए उदाहरण को देखें:

➤ **उदाहरण 3.** भारत इस वर्ष विश्वकप जीतेगा क्योंकि यह वर्तमान क्रिकेट की सबसे संतुलित एक दिवसीय टीम है।

➤ **उदाहरण 4.** वह घर देर रात को आया। वह फिल्म देखने के लिए गया होगा।

निष्कर्ष: हम ऊपर दिए गए उदाहरण में देखते हैं कि परिणाम कारण पर निर्भर करता है। उदाहरण (3) में, कारण (सबसे संतुलित वनडे टीम) परिणाम (भारत विश्वकप जीतेगा) का समर्थन करता है और इसलिए यह सही तर्क है। किन्तु उदाहरण (4) में यह तर्क है कि परिणाम (देर से घर आना) हो चुका है। इसलिए कारण फिल्म देखना हुआ होगा किन्तु यह बात ध्यान देने योग्य है कि प्रभाव हुआ होगा (वह देर रात घर आया होगा) क्योंकि अलग कारण रहा होगा। उदाहरण (4) एक अच्छा तर्क नहीं है या इसे कमजोर तर्क कहा जा सकता है।

अंतिम टिप्पणी: कारण सम्बन्धी तर्क मजबूत, कमजोर या गलत हो सकते हैं।

(iii) **उदाहरण संबंधी तर्क:** कभी-कभी तर्क कुछ उदाहरण/उदाहरणों या आधार के रूप में दिया जाता है। नीचे दिए गए उदाहरण को देखते हैं जो कि सिद्धान्त को समझता है।

► **उदाहरण 5.** हमें 'X' ब्रांड का कोल्ड क्रीम उपयोग करना चाहिए क्योंकि 'X' ब्रांड माधुरी दीक्षित द्वारा उपयोग किया जाता है।

► **उदाहरण 6.** हमें गुलाब पसंद करना चाहिए क्योंकि चाचा नेहरू को गुलाब पसंद थे।

निष्कर्ष: उदाहरण (5) में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि (हमें 'X' ब्रांड का क्रीम उपयोग करना चाहिए) जिसमें कि प्रारूप ब्रांड का उदाहरण ('X' ब्रांड माधुरी दीक्षित द्वारा उपयोग किया जाता है) था। उदाहरण (6) में निष्कर्ष (हमें गुलाब पसंद करना चाहिए) प्रारूप को उदाहरण के रूप में प्रयोग करते हुए (क्योंकि यह चाचा नेहरू को पसंद था) बाहर आया। यहाँ हम उदाहरण 5 में कह सकते हैं कि एक विशेष अभिनेत्री द्वारा किसी ब्रांड का उपयोग करना, सभी लोगों को पसंद या नापसंद का कारण नहीं है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अलग पसंद है। उदाहरण (6) की स्थिति भी इसी प्रकार की है। सभी व्यक्ति गुलाब को सिर्फ इसलिए पसंद नहीं कर सकते क्योंकि चाचा नेहरू को यह पसंद था।

अंतिम टिप्पणी : उदाहरण सम्बन्धी तर्क या तो कमजोर या गलत होते हैं।

नोट: उदाहरण 1 और 2 में निष्कर्ष का हिस्सा तर्क की शुरुआत थी। किसी समय आप देख सकते हैं कि उदाहरण बीच में दिया जाता है। इसका मतलब है कि निष्कर्ष का भाग हमेशा अंत में नहीं होता। यह लेखक के लिखने की कला पर निर्भर करता है।

(iv) **अंध वकालत पर आधारित तर्क:** इस तरह के तर्क विक्रेता के तर्क की तरह है जिसका केवल उद्देश्य अपना सामान

बेचना है। वह अपने सामान के फायदे के बारे में बोलता है। इसलिए विक्रेता का तर्क इस तरह का है जहाँ निष्कर्ष सकारात्मक अंक और फायदे के नाम से बाहर आता है। इस प्रकार के तर्क निजी जीवन में मुख्य है।

► **उदाहरण 7.** व्यायाम शरीर के लिए अच्छा है और विद्यार्थी के पढ़ाई में कठिन परिश्रम करने के लिए अच्छे स्वास्थ्य का होना आवश्यक है। यह कारण है कि प्रत्येक शैक्षणिक संस्था में जिम एवं योगा केंद्र होना चाहिए।

► **उदाहरण 8.** हड़ताल पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए क्योंकि यह सभी लोगों की जिंदगी को प्रभावित करता है।

निष्कर्ष: उदाहरण 7 में निष्कर्ष है कि प्रत्येक शैक्षणिक संस्था में जिम एवं योगा केंद्र होना चाहिए क्योंकि व्यायाम शरीर के लिए अच्छा होता है और विद्यार्थी के लिए अच्छे स्वास्थ्य का होना आवश्यक है। इसमें कोई शक नहीं है कि अच्छे स्वास्थ्य से अच्छा दिमाग विकसित होता है लेकिन यह प्रायोगिक रूप से संभव नहीं है कि प्रत्येक शैक्षणिक संस्था में जिम हो। इसलिए उदाहरण 7, एक कमजोर तर्क है। उदाहरण 8 में हड़ताल पर पाबंदी की माँग की गयी है और यह माँग जायज है क्योंकि हड़ताल का नकारात्मक प्रभाव होता है। इसलिए उदाहरण 8 एक मजबूत तर्क है।

अंतिम टिप्पणी : इस प्रकार के तर्क कमजोर या मजबूत हो सकते हैं।

(v) **कालक्रम पर आधारित तर्क:** हम बहुत समय से देखते हैं कि निष्कर्ष सिर्फ कुछ आयोजनों के कालक्रम के आधार पर निकाला जाता है। नीचे दिए गए उदाहरण को देखें—

► **उदाहरण 9.** कंप्यूटर का आविष्कार टेलीविजन के बाद हुआ। इसलिए टेलीविजन की टेक्नोलॉजी कंप्यूटर से न्यून है।

► **उदाहरण 10.** गाना 'B', गाना 'C' के दो महीने पहले आया। इसलिए पहला, बाद का नकल नहीं हो सकता।

निष्कर्ष: उदाहरण 9 में यह माना गया है कि तकनीकी रूप से कम वस्तु हमेशा बेहतर वस्तुओं से पहले आता है। यह ज्यादातर समय में सही हो सकता है लेकिन 100% स्थिति में यह सही नहीं है। इसलिए उदाहरण 9 का निष्कर्ष एक प्रश्नचिह्न है जो कि दिए गए तर्क को कमजोर बनाता है। दूसरी स्थिति में, यह संभव है कि गाना 'C', पहले रिकार्ड कर लिया गया होगा, शायद यह गाना 'B' के बाद रिलीज किया गया होगा। इसलिए इस स्थिति में नकल की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता और यह उदाहरण 10 में दिए गए तर्क को कमजोर तर्क बनाता है।

अंतिम निष्कर्ष: इस प्रकार के तर्क ज्यादातर कमजोर और उलझन में डालने वाले होते हैं। अब तक सभी तर्क सही मायनों में विस्तार से चर्चित किये गये हैं। अब हम कुछ मुख्य शब्दों पर ध्यान देंगे ताकि आप तर्क से निष्कर्ष आसानी से निकाल सकें। नीचे मुख्य बिंदु दिए गए हैं:

इसलिए, इस प्रकार,
इसके कारण, इसके फलस्वरूप,
अतः

ऊपर दिये गये मुख्य बिंदु के अलावा निष्कर्ष नीचे दिए गए कुछ पदों से भी पता लगाया जा सकता है :

नतीजतन

यह अनुमान लगाया जा सकता है

कि

इसका मतलब है कि

यह साबित करता है कि
यह दिखाता है कि
इससे पता चलता है कि
इस प्रकार कि

यदि आप किसी वाक्य से पहले ये मुख्य बिंदु/पद पाये, तो यह आपके वाक्य का निष्कर्ष होगा। यदि मुख्य बिंदु/पद अनुपस्थित है तो अपनी सामान्य बुद्धि का उपयोग करें और उस वाक्य को निकालें जो कि इन मुख्य बिंदु/पद का अनुसरण करता है और यह वाक्य आपका निष्कर्ष होगा।

तर्क की अवधारणा को सीखने के बाद हम आसानी से तार्किक योग्यता संबंधी सवालों को हल कर सकते हैं, जो कि विभिन्न प्रतियोगी परीक्षा में पूछे गये हैं, जिसमें प्रतियोगी को तर्क की प्रबलता का मूल्यांकन करना आवश्यक है। कथन के आधार पर तर्क प्रश्न में दिये जाते हैं और परीक्षार्थी को निकालना आवश्यक है कि:

(a) कौन-सा तर्क मजबूत है?

(b) कौन-सा तर्क कमजोर है?

हम जानते हैं कि "मजबूत" तर्क वे हैं, जो कि महत्वपूर्ण और प्रश्न से संबंधित दोनों होते हैं। "कमजोर" तर्क हैं जो कि कम महत्वपूर्ण होते हैं और जो प्रश्न से सीधे जुड़े नहीं होते या प्रश्न के तुच्छ पहलू से जुड़े होते हैं। तर्क मजबूत दिया गया है या नहीं, इसके लिए हम उदाहरण में दिए गए पदों के आधार पर आगे बढ़ेंगे।

हल के पद

पद I : दिए गए तर्क की प्रारंभिक जाँच करें।

पद II : पता लगाएँ कि दिया गया तर्क वास्तव में पालन करता है या नहीं।

पद III : पता लगाएँ कि तर्क वास्तव में वांछित है (सकारात्मक तर्क के मामले में) या हाइनकारक (नकारात्मक तर्क के मामले में)।

पद IV : पता लगाएँ कि कथन तथा तर्क ठीक से संबंधित हैं।

अब हम सभी पदों को एक के बाद एक चर्चा करेंगे—

पद I : दिए गए तर्क की प्रारंभिक जाँच

प्राथमिक स्थिति में हम जाँच करते हैं कि तर्क कितना कमजोर है यदि प्राथमिक स्थिति में ही हम पाते हैं कि तर्क बहुत कमजोर है तो आगे के पदों में जाने की जरूरत नहीं है। बहुत सारी स्थिति में कमजोर तर्क सीधे दिख जाते हैं और हमें निष्कर्ष निकालते वक्त यह सोचने की जरूरत नहीं है कि वे कमजोर हैं इस प्रकार के तर्क निम्न श्रेणी में आते हैं:

- (i) **संदिग्ध/अस्पष्ट तर्क:** इस प्रकार के तर्क से स्पष्ट नहीं होता कि यह किसी कार्यवाही से कैसे संबंधित है। वे यह भी स्पष्ट रूप से नहीं दिखाते कि लेखक क्या कहना चाहते हैं।

उदाहरण 11.

कथन: प्रत्येक को अपनी जिंदगी का हर एक सेकण्ड का आनंद लेना चाहिए क्योंकि सभी को एक दिन मरना है।

तर्क: नहीं, क्योंकि प्रत्येक को अपनी जिंदगी की महत्वाकांक्षा पूरा करने के बारे में सोचना चाहिए और मौत को जिंदगी के लक्ष्य के बारे में नहीं सोचना चाहिए।

टिप्पणी: यहाँ, कथन और तर्क सही तरीके से संबंधित नहीं है। कथन कहता है कि जिंदगी का प्रत्येक पल जीना चाहिए। जिंदगी जीने का मतलब प्रत्येक की महत्वाकांक्षा को पूरा करना नहीं है। वास्तव में एक व्यक्ति अपनी महत्वाकांक्षा पूरी करते-करते अपनी जिंदगी जी सकता है। वास्तव में, हम कह सकते हैं कि हम अपनी इच्छा के काम किए बिना, हम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त दिया गया कथन कोई संकेत नहीं

देता कि कोई मौत को एक लक्ष्य के रूप में देखता है। इस प्रकार इस स्थिति में कथन और तर्क भ्रामक स्थिति में छोड़ देते हैं और दिए गए तर्क को कमजोर बनाते हुए हमारे दिमाग में अस्पष्ट प्रभाव छोड़ते हैं।

- (ii) **अनुपयोगी/अतिरिक्त तर्क:** इस प्रकार के तर्क कथन का गहराई से अध्ययन नहीं करते। वे सिर्फ कथन पर 'गौर' करते हैं और कथन को कमजोर तर्क की श्रेणी में डालते हैं।

उदाहरण 12.

कथन: क्रिकेट को भारत में प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।

तर्क: हाँ, इसका कोई उपयोग नहीं है।

टिप्पणी: यहाँ तर्क, तथ्य की गहराई तक नहीं जाता और इसे कमजोर तर्क बनाता है।

- (iii) **प्रश्न के आधार पर तर्क:** इस प्रकार के तर्क बहुत कमजोर होते हैं क्योंकि तर्क में दिए गए प्रश्न के प्रारूप बिना किसी तथ्य के होते हैं और तर्क की कोई तकनीक नहीं होती। वास्तव में, इस प्रकार के तर्क में तर्ककर्ता प्रश्न करता है।

उदाहरण 13.

कथन: क्या भारत में आयात बंद किया जाना चाहिए?

तर्क: हाँ, क्यों नहीं?

टिप्पणी: यहाँ कथन प्रश्न के रूप में होता है और तर्ककर्ता बिना किसी कथन के तर्क के रूप में प्रश्न करता है इसलिए दिया गया कथन कमजोर है।

- (iv) **बहुत आसान तर्क:** इस प्रकार के तर्क प्रकृति से बहुत आसान होते हैं। वे छोटे वाक्यों के रूप में होते हैं किन्तु किसी तथ्य या जमे हुए पद का उन्हें साथ नहीं

मिलता। इसलिए इस प्रकार के तर्क नहीं होते और वे कथन से सही तरह से जुड़े होते हैं किन्तु अपने सामान्य प्रकृति की वजह से वे कमजोर तर्क की श्रेणी में आते हैं।

उदाहरण 14.

कथन: जिंदगी का मजा लेना हमारी जिंदगी का सिद्धांत होना चाहिए।

तर्क: नहीं, इस सोच के साथ हम कुछ भी करने में समर्थ नहीं हो सकते।

टिप्पणी: यहाँ दिया गया कथन सामान्य कारण है जिसमें कोई तत्त्व नहीं है। यहाँ यह कमजोर तथ्य की श्रेणी में आता है।

पद II : यह योजना कि दिया गया तर्क सही में पालन करता है या नहीं

यदि तर्क को प्रारंभिक पदों में से नकार दिया जाता है, तो हमें उसे जाँचने के लिए और पदों की जरूरत नहीं होती। किन्तु यदि प्रारंभिक पद स्पष्ट है तो हम पद II में आते हैं।

स्थिति I: जब उत्तर अनुसरण करता है।

पद II में, उत्तर निम्न स्थिति में अनुसरण करता है:

- (i) **स्थापित तथ्य:** स्थापित तथ्य का मतलब है कि यह सार्वजनिक रूप से माना गया/वैज्ञानिक रूप से संबंधित होना चाहिए। जवाब पाठ्य का अनुसरण करता है यदि यह तथ्य हो जैसे कि विशेष जवाब उचित पाठ का अनुसरण करता है।

उदाहरण 15.

कथन: क्या शराब पीने से बचना चाहिए?

तर्क: हाँ! यह स्वास्थ्य खराब करता है।

उदाहरण 16.

कथन: सचिन तेंदुलकर अब से 10 साल बाद भी टीम में चयनित होंगे।

तर्क: हाँ, तेंदुलकर दुनियाँ के महान क्रिकेटर्स में से एक हैं।

उदाहरण 17.

कथन: शादी शुदा लोगों को अपने माता-पिता से अलग रहना चाहिए।

तर्क: हाँ, अलग रहना शादी शुदा लोगों को ज्यादा आजादी प्रदान करता है।

उदाहरण 18.

कथन: क्या धूम्रपान को बढ़ावा देना चाहिए?

तर्क: नहीं, धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

टिप्पणी: ऊपर दिए गए उदाहरण में, सभी दिए गए तर्कों का अनुसरण करना चाहिए क्योंकि ये स्थापित तथ्य हैं। अतः दिए गए सभी तर्क पद II की परीक्षा में पास कहे जा सकते हैं।

नोट: यह बात ध्यान देने योग्य है कि उदाहरण 15, उदाहरण 16, उदाहरण 17 और उदाहरण 18 में दिए गए तर्क पद II को पास करते हैं किन्तु यह पता नहीं लगाया जा सकता कि ये तथ्य मजबूत हैं या नहीं, उन्हें मजबूत तभी कहा जायेगा। जब यह पद III और पद IV भी पास कर लें।

- (ii) **अनुभव के आधार पर पूर्वानुमान:**

इस प्रकार के तर्क तथ्य संबंधी तर्क को सिद्ध करने के करीब है। किन्तु वास्तव में, ये स्थापित तथ्य नहीं हैं क्योंकि यह सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं है जिससे इन्हें स्थापित तथ्य नहीं माना जा सकता। इस प्रकार के तर्क वास्तव में, अनुभव के आधार पर दिये जाते हैं। नीचे दिए गए उदाहरण को देखें:

उदाहरण 19.

कथन: राष्ट्रीय खेल टीम के चयन के लिए कप्तान को अपनी राय नहीं देनी चाहिए।